E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

राजा दिलीप का चरित्रचित्रण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

रघुवंश के द्वितीय सर्ग में राजा दिलीप का चरित्र चित्रण पूर्णतया प्रकाश में आ गया है। राजा दिलीप सच्चे गो-सेवक तथा गुरु द्वारा बतलाये गये व्रत का पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करने वाले हैं। रघुवंश में कहा गया है कि वे चक्रवर्ती राजा दिलीप स्वादिष्ट कोमल घास के कौर से शरीर खुजलाने से, मक्खी-मच्छरों के उड़ाने से और बिना रुकावट स्वच्छन्द चलने वाली उस नन्दिनी की सेवा में संलग्न थे-

आस्वादवद्भिः कवलैस्सतृणानां कण्डूयनैर्दशनिवारणैश्च।

अव्याहतैः स्वैरगतैः स तस्याः सम्राट् समाराधनतत्परोऽभूत्।।

पुनः एक स्थान पर कहा गया है कि भुजबल से शत्रुओं के संहारक दिलीप अरुन्धती सहित वशिष्ठ को प्रणाम कर सायंकाल के कृत्यों को समाप्तकर दुहने के बाद बैठी हुई नन्दिनी की ही पुनः सेवा करने लगे-

गुरोः सदारस्य निपीड्य पादौ समाप्य सान्ध्यञ्च दिलीपः।

दोहावसाने पुनरेव दोग्ध्रीं भेजे भुजोच्छिन्नरिपुर्निषण्णाम्।।

वे अत्यन्त दयालु, कारुणिक तथा प्राणिमात्र के प्रति दया का भाव रखने वाले हैं जो कि रघुवंश के द्वितीय सर्ग के इस सन्दर्भ से होता है-दयालु एवं कीर्तियों से सुशोभित राजा दिलीप ने प्रियपत्नी सुदक्षिणा को लौटाकर अपने दूध से चारों समुद्रों को तिरस्कृत करने वाली सुरभि की पुत्री पृथिवी नन्दिनी की चारों समुद्रों को चार स्तनों के रूप में धारण करने वाली गौरूपी पृथिवी के समान रक्षा की-

निवर्त्य राजा दयितां दयालुस्तां सौरभेयीं सुरभिर्यशोभिः।

पयोधरीभूतचतुःसमुद्रां जुगोप गोरूपधरामिवोर्वीम्।।

इसी कारण धनुष को धारण किये हुये होने पर भी राजा के हृद्गत भाव की अनुभूति हरिणियों को हो गयी थी और वे राजा को निस्तब्धता के साथ भयरहित होकर देख रही थीं-

"धनुर्भृतोऽप्यस्य दयाऽऽरद्रभावमाख्यातमन्तःकरणैर्विशङ्कैः।

विलोकयन्त्यो वपुरापुरक्ष्णां प्रकामविस्तारफलं हरिण्यः"।।

वे एक अत्यन्त पराक्रमी, शूरवीर, स्वावलम्बी, कष्टसहिष्णु तथा तेजस्वी क्षत्रिय राजा हैं। गौ-सेवा व्रत में संलग्न हो जाने पर उन्होंने अपने पीछे-पीछे चलने वाले सभी अनुचरों को वापिस कर दिया था। उन्हें वन में अपनी रक्षा के निमित्त किसी दूसरे की आवश्यकता न थी। वे अपने पराक्रम से ही अपनी रक्षा करने में समर्थ थे-

व्रताय तेनानुचरेण धेनोर्न्यषेधि शेषोऽप्यनुयायिवर्गः।

न चान्यतस्तस्य शरीररक्षा स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।।

वे अत्यन्त प्रभावशाली तथा भाग्यशाली भी हैं। उनके प्रभाव के ही कारण जड़ पदार्थ तथा वनदेवता भी उनका स्वागत कर रहे थे-

विसृष्टपार्श्वानुचरस्य तस्य पार्श्वद्रुमाः पाशभृता समस्य।

उदीरयामासुरिवोन्मदानामालोशब्दं वयसां विरावैः।।

गुरु वसिष्ठ के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा वे उनकी आज्ञा का अक्षरशः पालन करने में सतत संलग्न हैं। वे अपने अपमान अथवा पराभव को सहन कर सकने वाले एक मानधन व्यक्ति हैं-

ततो मृगेन्द्रस्य मृगेन्द्रगामी वधाय वध्यस्य शरं शरण्यः।

जाताभिषङ्गो नृपतिर्निषङ्गादुद्धर्तुमैच्छत् प्रसभोद्धतारिः।।

अर्थात् बाद में सिंह के समान निर्भीक चलने वाले शरणागतरक्षक शत्रुओं को उखाड़ फेंकने वाले राजा दिलीप ने अपमान का अनुभव करके मारने योग्य उस शेर के वध के लिए तरकस से बाण निकालने की इच्छा की।

वे अपने पक्ष का युक्तियुक्त समर्थन में पूर्णतया कुशल हैं। उनकी युक्तियां भी उनकी सुशीलता तथा विनम्रता की द्योतक है। शब्द के वास्तविक अर्थ में वे क्षत्रिय राजा हैं-

क्षतात् किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः।

राज्येन किं तद्विपरीतवृत्तेः प्राणैरूपक्रोशमलीमसैर्वा।।

वे अपने कर्तव्य का पालन करने के लिये अपने शरीर का बलिदान करने में भी संकोच नहीं करते हैं। गाय की रक्षा करना उनका महान् कर्त्तव्य था। इसका व्रत वे ले चुके थे। अतः उससे डिगना उनकी प्रतिष्ठा के अनुकूल न था। उन्होंने सिंह से कहा कि "तुम मुझे खा लो तथा गाय को छोड़ दो"। साधारण पुरुषों की भाँति उन्हें अपने पञ्च भौतिक शरीर के प्रति न तो किसी प्रकार का मोह ही है और न चिन्ता। वे पञ्चतत्वनिर्मित शरीर की अपेक्षा अपने यशःशरीर के लिये ही पूर्णरूपेण चिन्तित हैं-

किमप्यहिंस्यस्तव चेन्मतोऽहं यशःशरीरे भव मे दयालुः।

एकान्तविध्वंसिषु मद्विधानां पिण्डेष्वनास्था खलु भौतिकेषु।।

वे अपने वंश की प्रतिष्ठा हेतु अत्यधिक चिन्तित हैं। इसी कारण गुरु की आज्ञा से वास्तविक एवं सच्चे रूप से गो-सेवा-व्रत में संलग्न हैं। गाय द्वारा उनकी परीक्षा लिये जाने पर भी वे खरे ही उतरते हैं तथा उसी के परिणामस्वरूप वे गाय नन्दिनी से अपने मनोनुकूल वरदान भी प्राप्त करते हैं। नन्दिनी द्वारा दुग्धपान के लिये आज्ञा दे दिये जाने पर भी वे बछड़े के पीने तथा होम विधि से बचे हुये दुग्ध को गुरु की आज्ञा से ही पीने के अभिलाषी हैं।

उनके चरित्र की उदात्तता से सम्पूर्ण द्वितीय सर्ग व्याप्त है। वे एक सत्यनिष्ठ महापुरुष हैं।